P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-2) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जातिवाद उन्मूलन : बाबा साहेब के व्याख्यान 'जाति का नाश' का व्यावहारिक अध्ययन

प्रीतम सिंह
व्याख्याता,
हिन्दी विभाग,
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, कनीपला,
करूक्षेत्र, भारत

सारांश

जाति व्यवस्था भारत में सदियों से चली आ रही है। इस व्यवस्था के विरुद्ध बहुत सारे समाज सुधारक खड़े हुए, इन सभी समाज सुधारकों ने जन–आंदोलन खड़े किये, परन्तु ये सब इस व्यवस्था के समक्ष विफल हुए। आधुनिक काल में जातिवाद के विरुद्ध सबसे बड़ा संघर्ष खड़ा करने वाले महामानव थे बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर। उन्होंने ''जातिवाद के विनाश'' में जाति के विनाश के सिद्धान्त प्रतिपादित किये जो आज भी महत्त्वपूर्ण और प्रासंगिक हैं। यह शोध–पत्र उनके निबंध ''जातिवाद के विनाश'' का अध्ययन है।

मुख्य शब्द : बाबा साहब अंबेडकर, जाति, विनाश, धर्म।

प्रस्तावना

हिन्दू समाज में कई समाज सुधारक हुए जिन्होंने समाज की कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष किया और समाज को एक नये पथ पर अग्रसर किया। ऐसे ही एक महामानव का नाम है – बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर। उन्होंने अपने जीवन के माध्यम से समाज में व्याप्त कई मिथकों पर प्रहार किये। अपने जीवन काल में उन्होंने जातिभेद के विरुद्ध संघर्ष किया और जातिवाद का एक आलोचनात्मक ढांचा समाज के सामने रखा। यह ढांचा एक ऐसे उद्‌बोधक के रूप में सामने आया जो कभी रखा ही नहीं गया।

अध्ययन का उद्देश्य

बाबा साहब का यह वक्तव्य 1935 के जात–पात तोड़क मंडल के वार्षिक सम्मेलन के अध्यक्षीय उद्‌बोधन के तौरपर लिखा गया था। परन्तु उस समय ये उद्‌बोधन पढ़ा नहीं जा सका। बाबा साहब के निधन के कई दशक बीत जाने के बाद भी समाज में आज भी जातिवाद पर्याप्त मात्रा में विद्यमान है। परन्तु यदि समाज से जातिवाद को समाप्त करना है तो बाबा साहब द्वारा प्रतिपादित उनके विचारों को आत्मसात करना होगा तथा व्यवहार, आचरण में लाना होगा। इस शोध–पत्र का यही उद्देश्य है।

12 दिसम्बर 1935 को बाबा साहब को जात–पात तोड़क मण्डल लाहौर की तरफ से निमन्त्रण प्राप्त हुआ। इस निमन्त्रण में बाबा साहब को जात–पात तोड़क मण्डल के वार्षिक सम्मेलन में मुख्य वक्ता के रूप में आमन्त्रित किया गया था। इस निमन्त्रण पत्र में लिखा गया –

> आप एक महान चिन्तक हैं और हमारी समझ के अनुसार आपने जाति का इतना गहन अध्ययन किया है कि जात–पात तोड़क मण्डल भी आपकी विद्वता से लाभान्वित होगा। मैंने जाति के बारे में अपने कई लेखों और उद्‌बोधनों के माध्यम से उद्‌धृत किया है। मैं अब आपके विचारों के बारे में जानने के लिये बहुत उत्तेजित हूँ। आपने जाति के विषय में लिखा है कि जाति का विनाश जाति के साथ जुड़े धार्मिक विचारों के विनाश के बिना सम्भव नहीं है। (प्राक्कथन 188)

बाद में यह उद्‌बोधन तो नहीं हो सका क्योंकि सवर्ण हिन्दुओं का संगठन जात–पात तोड़क मण्डल बाबा साहब के क्रान्तिकारी विचारों को सुनने के लिए तैयार नहीं था परन्तु बाबा साहब ने इस वार्षिक सम्मेलन के लिए जो उद्‌बोधन तैयार किया वह उद्‌बोधन ''जातिवाद का विनाश'' (Annihilaion of Caste) के रूप में प्रकाशित किया गया। आज यह उद्‌बोधन सब जगह एक पुस्तक के रूप में उपलब्ध है और संभवतया बाबा साहब की विद्वता का और

उनकी आलोचनात्मक विवेचना का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। किसी भी समस्या को तब तक हल नहीं किया जा सकता, जब तक उस समस्या का मूल न पता हो। बाबा साहब ने समस्या का मूल ढूंढकर अपने बाद आने वाली पीढ़ीयों के लिए उसके हल का मार्ग प्रशस्त किया। अतः इस पुस्तक को पढ़कर जातिवाद का मूल तत्त्व समझकर इसके विनाश का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है।

जाति के उद्‌गम के लिये कई विद्वानों के द्वारा कई सिद्धान्त प्रतिपादित किये गये हैं। एक पाश्चात्य हिन्दू विद्वान वामदेव शास्त्री (डेविड फ्राले) के अनुसार जातिवाद का उद्‌गम मांसाहारी प्रवृत्ति में देखा जा सकता है :–

> अस्पृश्यता को आज तक गलत समझा गया है। यह एक सामाजिक शुद्धि का मामला है, जिसमें अहिंसा का सिद्धान्त दृष्टिगोचर होता है। ब्राह्मण उन बर्तनों में नहीं खा सकते थे जिसमें मांस पकाया गया हो। इससे गैर ब्राह्मणों के साथ खाना वर्जित हो गया। विशेष तौर पर उन लोगों के साथ जो जानवरों का वध करते थे जैसे कि कसाई। इस तरह से यह एक सामाजिक प्रथा बन गई। (82)

अधिकतर विद्वानों के अनुसार जातिवाद एक मानव द्वारा दूसरे मानव का शोषण करने के लिए रचा गया एक चक्रव्यूह है। परन्तु ऐसे भी कई विद्वान हैं जिन्होंने भारतीय समाज पर इसके प्रभाव को रक्षात्मक बताया है। एक अन्य पाश्चात्य विद्वान दुबोये के अनुसारः–

> हिन्दू प्रायः ही विदेशी शासकों के अधीन रहे हैं, जिनका पंथ, परम्पराएँ और विधान बिल्कुल ही अलग थे, परन्तु फिर भी विदेशी शासक अपनी परम्पराएँ और विधान कभी भी भारत पर नहीं थोप सके और उनके सभी प्रयास निरर्थक सिद्ध हुए। विदेशी आक्रमण हमेशा ही भारतीय सामाजिक संरचना के सम्मुख छोटे सिद्ध हुए। इन सबसे रक्षा में भारत में प्रचलित जाति परम्परा का बहुत मुख्य योगदान रहा। (37)

भारत में ''कास्ट'' शब्द के सर्वप्रथम प्रयोग का श्रेय पुर्तगालियों को दिया गया है (डर्कज 19)। डर्कज ने अपनी पुस्तक कास्टस आव माइन्डज में जातिवाद के वर्तमान स्वरूप के लिए साम्राज्यवादी शक्तियों को जिम्मेदार बताया है। वो इस बारे में लिखते हैं :–

> साम्राज्यवाद में जातिवाद का स्वरूप बदल दिया गया व जातिवाद कहीं अधिक व्यापक कहीं अधिक शोषण करने वाला, कहीं अधिक एकात्म बना दिया गया। इससे भी कहीं अधिक जातिवाद को धर्म का एक अभिन्न अंग बना दिया गया। (13)

इस प्रकार बहुत सारी पुस्तकें पाश्चात्य विद्वानों द्वारा लिखी गई और जातिवाद के उद्‌गम के बारे में बहुत सारे सिद्धान्त प्रतिपादित किये गए और भारतीय समाज पर इसके प्रभाव के बारे में भी बहुत कुछ लिखा गया, परन्तु यह सब बाहरी लोगों के वृतान्त थे। यह विवेचना उन लोगों द्वारा की गई है जिन्होंने जातिवाद का दंश कभी नहीं सहा और कभी भी इससे प्रभावित नहीं रहे। पाश्चात्य जगत रंगभेद की नीति से सदैव ग्रसित रहा है और आज भी है। कई पश्चिमी समाजशास्त्रियों ने रंगभेद और जातिवाद का समानान्तर अध्ययन किया और जातिवाद की तुलना रंगभेद के साथ करने का प्रयास किया। यह तुलनात्मक अध्ययन अधिकतर असफल हुआ। अतः यह कहा जा सकता है कि पाश्चात्य विद्वानों का दृष्टिकोण कभी भी जातिवाद के अध्ययन के लिये संवेदनशील नहीं रहा।

जातिवाद के विनाश में बाबा साहब जातिवाद की प्रतिरक्षा करने वाले लोगों के तर्कों को ध्वस्त कर देते हैं। कुछ लोग जातिवाद की प्रतिरक्षा करने के लिए तर्क देते हैं कि जातिवाद केवल मात्र श्रम का विभाजन है। ये लोग तर्क देते हैं कि श्रम का विभाजन सभ्य समाज का एक अभिन्न अंग है और यदि यह विभाजन प्रत्येक सभ्य समाज का एक अंग है तो जातिवाद में कुछ भी बुराई नहीं है। एक बाहरी व्यक्ति संभवतया जातिवाद के बारे में यही धारणा रखता है परन्तु बाबा साहब अंबेडकर अपने उद्‌बोधन में बताते हैंः–

> पहली बात जो समझने की है वो यह है कि जातिवाद मात्र श्रम का विभाजन नही है। यह श्रमिकों का विभाजन भी है। प्रत्येक सभ्य समाज को निस्संदेह श्रम के विभाजन की आवश्यकता होती है। परन्तु किसी भी सभ्य समाज में श्रम का विभाजन, श्रमिकों के अप्राकृतिक विभाजन पर टिका नहीं होता। जातिवाद में श्रमिकों का विभाजन तो है ही परन्तु इन श्रमिकों के विभाजन में भी श्रेणियां हैं। किसी भी अन्य सभ्य समाज में श्रमिकों की श्रेणियां नहीं है। (234)

किसी भी सभ्य समाज का विकास और विस्तार इस बात पर निर्भर करता है कि वहाँ व्यक्तियों को कितनी स्वतंत्रता है? यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा का विकास करने के पर्याप्त अवसर प्राप्त होते हैं, तभी उसकी प्रतिभाओं का विकास हो पाता है और तभी समाज भी आगे बढ़ पाता है और स्वयं को विकसित कर पाता है। परन्तु जातिवाद व्यक्ति की प्रतिभा के विकास की संभावनाओं को नष्ट कर देता है और व्यक्ति को पंगु बना देता है। जातिवाद व्यक्तियों को एक दायरे में रख देता है, जिससे उस दायरे से बाहर निकलने की संभावना शून्य हो जाती है। बाबा साहब स्वयं शिक्षा के बल पर इस दुष्चक्र से बाहर निकले और दूसरों के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

बाबा साहब ने जातिवाद की विवेचना करते हुए लिखा कि श्रम करने वाली स्थिति सदा सम नहीं रह सकती। वह स्वयं का उत्थान करता रहता है, उसकी उन्नति में निरन्तरता बनी रहती है। परन्तु जाति में श्रमिक का शोषण किया जाता है। जातिवाद की दूसरी विसंगति

यह है कि जातिवाद में श्रमिक की इच्छा नहीं देखी जाती। श्रम के विभाजन के अंतर्गत श्रमिक को स्वतंत्रता होती है कि वह किस तरह का श्रम करना चाहता है परन्तु जातिवाद में श्रमिक का रोजगार उसके जन्म से पहले ही तय कर दिया जाता है। जातिवाद के तहत जो श्रम व्यक्ति के माता–पिता का होता है वही उस व्यक्ति का भी। अतः बाबा साहब की विवेचना जातिवाद की तह तक जाती है। जातिवाद श्रम का विभाजन तो है ही, परन्तु यह श्रमिकों का भी विभाजन है, इस व्यवस्था के अंतर्गत मनुष्य–मनुष्य में भेद करता है और शोषण किया जाता है, जहाँ ऊपर उठने की, उन्नति की संभावनाएं समाज द्वारा नष्ट कर दी जाती हैं।

जातिवाद केवल व्यक्ति की उन्नति ही नहीं रोकता अपितु इसने हिन्दू धर्म के विस्तार को भी अवरुद्ध किया है। अन्य किसी भी पंथ, सम्प्रदाय में जाना, धर्म परिवर्तन कर लेना बहुत ही सरल है। परन्तु हिन्दू धर्म में ऐसा नहीं हो पाता क्योंकि जातिवाद की व्यवस्था अन्य किसी धर्म में नहीं है। बाबा साहब अंबेडकर बताते हैं कि हिन्दू समाज की कायरता और शक्तिहीनता की जड़ में भी जातिवाद है। वे लिखते हैं :–

> सिख और मुस्लिम कहां से शक्ति प्राप्त करते हैं। मैं यह बात विश्वास से कह सकता हूँ कि वे अपनी शारीरिक क्षमता, तैयारी या भोजन के कारण तो शक्तिशाली नहीं हैं अपितु एक सिख की शक्ति इस कारण से है क्योंकि उसे पता है कि अगर वह मुसीबत में होगा तो बाकी सभी सिख उसकी मदद के लिए आ जाएंगे। ठीक ऐसा ही मुसलमानों के साथ भी है। परन्तु हिन्दू के साथ ऐसा नहीं है, क्योंकि उसे कभी यह विश्वास नहीं हो पाता कि उसके साथी हिन्दू उसकी मदद को आयेंगे? इस कारण से हिन्दू कमजोर और कायर बन जाता है। (255–56)

सिखों और मुसलमानों में अपासी संगठन का कारण है उनमें भाईचारे की भावना। सिखों और मुसलमानों के अपने–अपने वर्ग में एक भाईचारे का भाव होता है और यह भाईचारे का भाव इसलिये उत्पन्न होता है क्योंकि सिखों और मुसलमानों में सभी लोग समान हैं और यही समानता उनमें भाईचारे का भाव उत्पन्न करती है, परन्तु हिन्दुओं में जाति एक दीवार की भांति खड़ी हो जाती है और भेदभाव उत्पन्न करती है।

जातिभेद की संकल्पना शोषण के अलावा एक और पहलू है और वह है प्रदूषण का। जातिवाद एक ऐसी प्रणाली है जिसमें कुछ जातियों को कुछ विशेष अधिकार प्राप्त हैं, उन्हें पवित्र माना गया है और कुछ जातियों को निकृष्ट। अगर कोई सवर्ण जाति का व्यक्ति किसी असवर्ण जाति के व्यक्ति से मिलता है और उसे छू लेता है तो सवर्ण जाति का व्यक्ति भी दूषित हो जाता है। जाति का यही पक्ष पैशाचिक है और यहीं से छुआछूत प्रारम्भ होती है। श्रम के विभाजन का यह तन्त्र जो मनुष्यों के शोषण के लिए बना था वह एक अमानवीय पैशाचिक प्रणाली बन जाती है। जिस समय बाबा साहब अम्बेडकर ''जाति का विनाश'' लिख रहे थे उस समय जाति का विभाजन बहुत सख्त था और मनुष्यों के इर्द–गिर्द बनी इस दीवार को लांघना या तोड़ना बहुत ही दुष्कर कार्य था। आज के समाज में यह दीवार क्षीण अवश्य पड़ गई है परन्तु समाप्त नहीं हुई।

आज के समाज से छुआछूत की पुरानी संकल्पना लगभग समाप्त हो गई है क्योंकि आधुनिक जीवन शैली ने इसको लगभग अप्रासंगिक बना दिया है। आज के समय में सभी व्यक्तियों को जन परिवहन में यात्रा करनी पड़ती है और किसी को यह नहीं पता होता कि उसके साथ जो दूसरा व्यक्ति बैठा है वह किस जाति का है। न तो इस तरह के पक्षपात का किसी के पास समय है और न ही इस तरह के पूर्वाग्रह से ग्रस्त व्यक्ति को कोई सहन करेगा। इसी तरह से आज सभी जातियों के व्यक्ति घर से बाहर बाजार में बने भोजनालयों में जाकर भोजन करते हैं, परन्तु रसोईया किस जाति का है कोई नहीं पूछता, दूसरे शब्दों में छुआछूत की संकल्पना लगभग समाप्त हो गई है। परन्तु जाति का भेदभाव आज भी कायम है। कितने ही समाज सुधारक आये, कितने ही नये धर्म बने परन्तु जाति को समाप्त नहीं कर पाये। बाबा साहब की बौद्धिक क्षमता का पता इसी अध्ययन से लग जाता है कि जाति अस्तित्व के पीछे के कारण की वो सटीक व्याख्या कर पाये। उनके अनुसार जाति के तीन मुख्य अवयव है :

1. सहभोज पर रोक
2. अंतर्जातीय विवाह पर रोक
3. एक दूसरे को छूने पर रोक

(छुआछूत और जाति व्यवस्था, 39)

आधुनिक जीवन शैली के कारण आखिरी अवयव समाप्ति की ओर है, परन्तु पहले दो अवयव आज भी समाज में प्रचलन में हैं।

बाबा साहब जाति के इस लचीलेपन के पीछे के कारण बताते हैं। विश्व में दमन और शोषण को समाप्त करने के लिए बहुत सी क्रान्तियाँ हुई परन्तु जाति की इस दमनकारी प्रणाली के विरुद्ध कोई क्रान्ति नहीं हो पाई, न ही कोई महापुरुष इसे समाप्त कर पाया। बाबा साहब इसका कारण बताते हैं श्रेणीगत असमानता (graded inequality)। वे लिखते हैं :–

> एक असमान सामाजिक व्यवस्था में सभी शोषित इकट्ठे हो सकते हैं और अपना शोषण करने वाले क्रूर लागों के विरुद्ध वे इकट्ठे हो सकते हैं और दमनकारी व्यवस्था को समाप्त कर सकते हैं। परन्तु ऐसा तभी हो सकता है यदि एक वर्ग शोषण करने वाला हो ओर दूसरा वर्ग शोषित। परन्तु श्रेणीगत असमानता वाली प्रणाली में ऐसा संभव नहीं है। (छुआछूत, 40)

श्रेणीगत असमानता वाली व्यवस्था में, जैसा कि जाति व्यवस्था में है, ऐसा नहीं है। जाति व्यवस्था में केवल दमन करने वाला और शोषित वर्ग ही नहीं है अपितु इसमें कई वर्ग हैं। जाति व्यवस्था में चार वर्ग हैं – उच्चतम अर्थात शीर्ष पर है ब्राह्मण, उच्चतम के बाहर

उच्चतर है क्षत्रिय, उच्चतर के बाद उच्च पर विराजमान है, वैश्य और सबसे नीचे के स्तर पर है शूद्र। नीचे के तीनों वर्ग : उच्चतर, उच्च और नीचे के स्तर के लोग ब्राह्मणों को चुनौती देना चाहते हैं, परन्तु कभी भी इकट्ठा नहीं हो सकते क्योंकि क्षत्रिय नहीं चाहता कि वैश्य और शूद्र उसके समान हो जायें। इस सोच के कारण ये कभी भी इकट्ठे नहीं हो पाये और कभी भी जातिवाद व्यवस्था को चुनौती नहीं दे सके।

बाबा साहब जातीय व्यवस्था के बारे में लिखते है कि क्या कारण है जिसकी वजह से हिन्दू आपस में सहभोज नहीं करते और अंतर्जातीय विवाह नहीं करते। वह लिखते हैं :

> इस प्रश्न का केवल एक ही उत्तर संभव है कि सहभोज और अंतर्जातीय विवाह उस हिन्दू के लिए एक घृणित कार्य है जो धार्मिक है। जाति एक भौतिक वस्तु नहीं है। ईंटों की दीवार की तरह या फिर कांटों वाली तार की एक बाढ़ नहीं है जो हिन्दुओं को आपस में घुलने–मिलने से रोकती है। जाति एक धारणा है, यह एक मनोस्थिति है। अतः जाति के विनाश का अर्थ एक भौतिक रुकावट का विनाश नहीं है, यह एक मनोस्थिति का बदलाव है। (286)

बाबा साहब के अनुसार यह मनोस्थिति इस बात के कारण है क्योंकि एक साधारण हिन्दू इस व्यवस्था को दैवीय व्यवस्था मानता है। उसके लिए जाति व्यवस्था में किसी भी प्रकार का व्यवधान दैवीय सत्ता को चुनौती है। अतः यदि जाति का विनाश करना है तो सबसे पहले इस मनोस्थिति में बदलाव करना होगा कि जाति व्यवस्था एक दैवीय व्यवस्था नहीं है। यदि एक बार सभी हिन्दू इस बात पर सहमत हो जाते हैं कि जाति व्यवस्था मानवों द्वारा निर्मित एक शोषण की व्यवस्था है तो यह व्यवस्था स्वयं ही चरमरा कर टूट जायेगी।

जात–पात तोड़क मण्डल ने जातीय व्यवस्था को नष्ट करने के लिए सबसे पहले सहभोजों का आयोजन किया जिसमें सभी जातियों के लोग एकत्रित होकर भोजन करते हैं। बाबा साहब जात–पात तोड़क मण्डल के इस प्रयोग की सराहना करते हैं, परन्तु साथ ही साथ वह यह बात भी कहते हैं कि यदि जातिवाद को सही मायनों में समाप्त करना है तो अंतरजातीय विवाहों को बढ़ावा देना होगा। बाबा साहब इस बारे में लिखते हैं :–

> यह एक आम अनुभव है कि सहभोज जाति की अनुभूति को और जाति की चेतना को समाप्त करने में असफल हैं। मेरे दृष्टिकोण से इस रोग की सही चिकित्सा अन्तरजातीय विवाह है। रक्त का मिश्रण ही एक अपनत्व की भावना का निर्माण कर सकता है। जब तक यह अपनत्व की भावना नहीं पनपती, तब तक अलगाव की भावना, एक दूसरे से अलग होने की भावना जो जाति की वजह से पनपती है; समाप्त नहीं होगी। (285)

बाबा साहब का अंतरजातीय विवाह वाली योजना से पाठक सहमत हो सकते हैं , परन्तु बाबा साहब की अधिक क्रान्तिकारी योजना है धर्म में परिवर्तन की। बाबा साहब इस बात को समझते थे कि शूद्रों के साथ भेदभाव की यह कहानी समाज की नहीं बल्कि धर्म की है। बाबा साहब शूद्रों के बारे में शास्त्रों में लिखी बातों को उद्धृत करते हैं :–

1. कथक संहिता और मैत्रायणी संहिता के अनुसार एक शूद्र को गाय दुहने नहीं देना चाहिए विशेष तौर पर वह गाय जिसका दुग्ध अग्निहोत्र के लिये प्रयोग होना हो।
2. शतपथ ब्राह्मण और मैत्रायणी संहिता व पंचविमसा ब्राह्मण के अनुसार – यज्ञ करते हुए शूद्र से नहीं बोलना चाहिये और यज्ञ के समय शूद्र वहाँ नहीं होना चाहिये।
3. शतपथ ब्राह्मण के और कथक संहिता के अनुसार – शूद्र को सोमरस पीने की आज्ञा नहीं है।
4. और आत्रेय ब्राह्मण और पंचविमसा ब्राह्मण के अनुसार – 'शूद्र' शेष सभी वर्णों का दास है, वह इसके सिवाय कुछ और नहीं हो सकता। (शूद्र कौन हैं 49)

बाबा साहब को आभास हुआ कि पुरातन ग्रन्थों में आस्था के कारण हिन्दू समाज स्थिर हो गया है। शास्त्र जिस समय में लिखे गये थे उस समय ये तर्कसंगत रहे होंगे, प्रासंगिक रहे होंगे, परन्तु समय के साथ कुछ वर्गों ने इन शास्त्रों का विवेचन अपने ढंग से किया और अपने लाभ के लिये किया गया। शास्त्रों को उस समय लिखा गया जिस समय विद्या या ज्ञान केवल वर्ग विशेष तक सीमित था। उनका विवेचन भी उसी वर्ग विशेष द्वारा किया गया और बहुत हद तक यह भी संभव है कि उस वर्ग विशेष द्वारा अपने लाभ के लिए शास्त्रों में परिवर्तन भी किया गया हो। बाबा साहब के गुरु जान डेवी ने भी इस विषय में लिखा है:–

> हर समाज अपने भूत काल की तुच्छ और मृत परम्पराओं में उलझ जाता है, और ऐसे समाज का पतन हो जाता है ... .. जैसे जैसे समाज ज्ञानवान होता जाता है वैसे ही समाज को भान होता है कि उसे प्रत्येक उपलब्धियों को सहेजने और अगली पीढ़ी को देने की आवश्यकता नहीं है बल्कि केवल वे उपलब्धियाँ आगे बताने की आवश्यकता है जिनमें समाज का उद्धार निहित हो। (Democracy and Eduction : An Introduction to Philosophy of Education)

बाबा साहब इस बात के पक्षधर हैं कि समय के अनुसार परिवर्तन होना चाहिये। और जाति आज के समयानुसार काल बाह्य हो गई है और इस व्यवस्था को भी समाज से बाहर का रास्ता दिखा दिया जाना चाहिये। बाबा साहब ने आर्य समाज की आलोचना भी इसी कारण से की है।

> मुझे आर्य समाजियों के साथ तकरार का बिल्कुल भी अफसोस नहीं है। आर्य समाज ने एक बड़ी गड़बड़ की है। हिन्दू

> समाज को स्थिर बना कर, जड़ बनाकर। उन्होंने आम हिन्दू को यह समझाया है कि वेद अनन्त हैं न तो उनका आरम्भ है और न ही अन्त और वे त्रुटिहीन हैं। जो भी सामाजिक संस्थायें वेदों पर आधारित है वे भी अनन्त हैं और उनका भी कोई आरम्भ या अन्त नहीं है और वे भी त्रुटिहीन है अतः उनमें किसी भी परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है। (अंबेडकर, प्राक्कथन 12)

बाबा साहब ने साहस दिखाया कि वे शास्त्रों को और आर्य समाज को प्रश्न पूछ सके। उन्होंने जात–पात तोड़क मण्डल के लिये लिखे गये अपने बीज वक्तव्य में जाति के विनाश के लिये जो सिद्धान्त प्रतिपादित किये हैं, वे अपने आप में क्रान्तिकारी हैं। उनके सुझाव निम्नलिखित हैं :–

> हिन्दू धर्म की केवल एक ही प्रामाणिक पुस्तक होनी चाहिये जो सभी हिन्दुओं के लिये मान्य हो। बाकी सब पुस्तकें विधि द्वारा प्रतिबन्धित कर दी जानी चाहिये और जो भी व्यक्ति इन पुस्तकों को समाज में प्रतिपादित करे या उनका प्रचार करे उसे सजा मिलनी चाहिये। हिन्दू समाज से पुजारी वर्ग समाप्त कर दिया जाना चाहिये और क्योंकि पुजारी वर्ग को समाप्त करना असंभव प्रतीत होता है तो कम से कम पुजारियों की वंशानुगत नहीं होनी चाहिये। यदि कोई व्यक्ति पुजारी बनना चाहते हो उसे सरकार द्वारा निर्धारित परीक्षा पास करनी चाहिये –
>
> – पुजारी द्वारा किया गया कोई भी कर्मकाण्ड तब तक मान्य न हो जब तक सरकार उसे मान्यता न दे।
>
> – पुजारी सरकार का कर्मचारी होना चाहिये और सरकार की अनुशासनात्मक कार्यवाही उस पर लागू होनी चाहिये।
>
> – पुजारियों की संख्या भी विधि द्वारा निर्धारित होनी चाहिये। (308–09)

बाबा साहब द्वारा दिये गये सुझाव इतने क्रान्तिकारी थे कि कोई सरकार उन पर अमल नहीं कर पायी और स्वतन्त्र भारत में बाबा साहब कभी भी ऐसे पद पर आसीन नहीं रहे, जहाँ से वो इन सब सुझावों को क्रियान्वित करवा पाते, परन्तु उन्होंने समाज को जाग्रत करने का एक बड़ा काम किया और समाज को शिक्षा का महत्त्व समझाया। समाज से जातिवाद का विनाश तो नहीं हो पाया है परन्तु बाबा साहब द्वारा दिये मूलमन्त्र के कारण अब यह क्षीण हो गई है। अस्पृश्यता को भारत के विधान द्वारा प्रतिबन्धित कर दिया गया और जो भी व्यक्ति अस्पृश्यता को व्यवहार में लाता है उसके लिये सजा का प्रावधान भी रखा गया है। परन्तु उससे भी बड़ा काम जो उन्होंने किया वह था समाज में शिक्षा का प्रचार–प्रसार। समाज में शिक्षा के प्रचार–प्रसार का प्रभाव आज सर्वत्र दिखायी पड़ता है। वह समाज जो सदियों से बेड़ियों में जकड़ा था और स्वयं को निम्न मान कर बैठा था उसमें एक स्वाभिमान जगा और स्वयं को समाज के सभी अंगों की समानता का भाव जगा। बाबा साहब की प्रेरणा से समाज अब उसी दिशा में अग्रसर है जिस दिशा में जाति व्यवस्था का विनाश होना तय है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

दुबोये, अबे जे.ए. हिन्दू मैनर्ज, कस्टमज एण्ड सेरेमनीज, डावर पब्लिकेशन्ज, 2002

डंकर्स, निकोलस बी., कास्टस आव माईन्ड, दिल्ली : परमानन्ट ब्लैक, 2003

अंबेडकर, बी.आर., अनचटेबिलिटी एण्ड कास्ट सिस्टम, आडियाज अंगलो संस्करण, दिनेश कुमार और वी.बी. अबरोल, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय प्रैस, 2004

डेवी, जान, डेमोक्रेसी एण्ड ऐजुकेशन, एन इन्ट्रोडक्शन टू द फिलासफी अव ऐजुकेशन, वाइल्डर पब्लिकेशंज लिमिटेड; 2009

अंबेडकर, बी.आर., 'प्राक्कथन' हू वर शूद्राज , दिल्ली : सम्यक प्रकाशन, 2016

अंबेडकर, बी.आर. 'एनहिलेशन आव कास्ट'' दिल्ली : नवयान पब्लिकेशनज, 2014